हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

HINDI-KANNADA AUR KANNADA-HINDI SHABDAKOSHON KA TULANATMAK ADHYAYAN

मंगळूरु विश्वविद्यालय की हिंदी में पीएच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की

रूपरेखा - SYNOPSIS

SUBMITTED TO MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोध निर्देशक :
डॉ. श्रीधर हेगडे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
फील्ड मार्षल के. एम्. कार्यप्पा,
महाविद्यालय, मडिकेरी- 571 201
(मंगळूरु विश्वविद्यालय की इकाई)

शोधार्थी :
श्री महबूबअली अ. नदाफ
अनुक्रमांक : 166302705
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
संत अलोशियस (स्वायत्त)
महाविद्यालय, मंगळूरु-575 003

Research Guide :
Dr. Shridhar Hegde
Head, Department of Hindi
Field Marshal K. M. Cariappa
College, Madikeri- 571 201
(A Constituent College of
Mangalore University)

Researcher :
Mr. Mahabubali A. Nadaf
Reg. No. : 166302705
Assist. Prof. Dept. of Hindi
St Aloysius College (Autonomous)
Mangaluru- 757 003

Registration Date : Ref: MU/ACC/PhD/CR-72/2016-17/A3 Date: 26/5/2017

: अनुसंधान केंद्र :

स्नातकोत्तर हिंदी अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगळूरु, मंगळूरु विश्वविद्यालय

DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY

2023

हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

HINDI-KANNADA AUR KANNADA-HINDI SHABDAKOSHON KA TULANATMAK ADHYAYAN

1. प्रस्तावना
2. शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य
3. पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्य
4. अनुसंधान की पद्धतियाँ
5. अनुसंधान की व्याप्ति एवं सीमा
6. अनुसंधान के अध्ययन का विभाजन
7. आधार ग्रंथसूची
8. संदर्भ ग्रंथसूची

1. प्रस्तावना :

भाषा ज्ञान ही मनुष्य को पशु से पृथक करता है । मनुष्य की उन्नति या अवनति में उसकी भाषा का प्रमुख पात्र होता है । इसलिए कन्नड में कहा जाता है कि 'ऊट बल्लवनिगे रोगविल्ल, मातु बल्लवनिगे जगळविल्ल' अर्थात् जो भोजन के बारे में जानता है वह निरोगी होता है, जो बात करना जानता है वह कभी लड़ाई में नहीं फँसता । भाषा में वह शक्ति है जो दुश्मन को भी दोस्त बनाती है ।

भाषा में प्रयुक्त शब्द और अर्थ एक सिक्के के दो पहलू हैं । उन्हें अपने अनुकूल बना लेना एक कला है । इस कला का आधार शब्दकोश है । शब्द भाषा का शरीर है, तो अर्थ उसकी आत्मा है । शब्दकोश में सामान्यतः कठिन शब्दों का सरल अर्थ बताया जाता है । इन अर्थों को चार प्रकार से बताया जाता है ।

जैसे – 1) शब्द का विग्रह करके अर्थ समझाना ।

2) शब्द का वर्णन या व्याख्या करके अर्थ समझाना ।

3) शब्द का पर्याय देकर अर्थ समझाना ।

4) शब्द की परिभाषा देकर अर्थ समझाना ।

मातृभाषा के साथ दूसरी भाषा सीखने और सिखाने के लिए उपर्युक्त चारों प्रकार के अर्थों की आवश्यकता होती है । एक शब्द के कई अर्थ बताये जाते हैं । उनमें से पर्याय शब्द को ढूँढना पडता है । पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत पर्याय शब्दों को ढूँढ कर जोडा जाता है । वे कम प्रचलित रहते हैं । प्रचलित पर्याय शब्दों का प्रयोग करने से कार्यालय अनुवाद भी आसान हो सकता है । इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है ।

शब्दकोश का संपादन करने के लिए शब्दों का उद्गम-विकास, व्याकरणिक संरचना और उपयोग की जानकारी आवश्यक है ।

योजनाबद्ध तरीके से संपन्न कार्य सफल होता है। शब्दकोश का संपादन करने के लिए तीन चरणों से गुजरना होता है। वे हैं – पूर्वनियोजन कार्य, निर्माण कार्य और प्रबंधन कार्य।

शब्दकोश का समग्र अध्ययन करने के लिए उसका वर्गीकरण आवश्यक है। हिंदी और कन्नड भाषी विद्वानों के वर्गीकरण का विश्लेषण किया गया है।

एक की विशेषता दर्शाने के लिए दूसरे की कमी दिखाना आवश्यक है। हिंदी शब्दकोशों की तुलना में हिंदी-कन्नड शब्दकोश एक प्रतिशत के करीब है। यही स्थिति कन्नड शब्दकोशों की तुलना में कन्नड-हिंदी शब्दकोशों की है।

हिंदी और कन्नड दोनों भाषाओं की विशाल और समृद्ध परंपरा है। इन दोनों भाषाओं के द्विभाषा शब्दकोशों का निर्माण नाम मात्र के लिए हुआ है। जितना हुआ है उसका अध्ययन इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया गया है।

2. शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य :

शोध मनुष्य के जीवन का अनिवार्य अंग है। नयापन नहीं तो जो है वह भी नष्ट हो जाता है। जहाँ हम हैं वहाँ से कहीं न कहीं चलना है। शब्दकोश विषय को मैंने इसलिए चुना कि जब भी किसी विषय को लेकर संदेह हुआ तो शब्दकोश से सहायता ली जाती है। हमारे संदेह को दूर करनेवाले इस शब्दकोश के संबंध में जानकारी हासिल करना था।

मैं एक कन्नड भाषी हूँ। हिंदी अध्यापक होने के नाते हिंदी भाषा सीखने में रुचि रखता हूँ। इसलिए हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी दोनों भाषाओं के शब्द संदेह को दूर करनेवाले शब्दकोशों का अध्ययन करना चाहता हूँ। हिंदी में हिंदी शब्दकोशों का अध्ययन हुआ है। कन्नड में कन्नड शब्दकोशों का अध्ययन हुआ है। लेकिन यह दोनों बहुत पहले हुए हैं। आधुनिक शब्दकोशों को लेकर अध्ययन नहीं हुआ है। इसके बाद हिंदी और कन्नड शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन हुआ तो

और भी अच्छे विचार सामने आ सकते हैं । हिंद-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन विषय मैंने इसलिए चुना क्योंकि इससे पहले इस विषय को लेकर किसी प्रकार का अध्ययन नहीं हुआ है ।

3. **पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्य** :

मनुष्य अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है । ऐसे में वह अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा को एक माध्यम बना लेता है । प्रादेशिक भिन्नता के कारण उसकी भाषा और संस्कृति में भी भिन्नता रहती है । लेकिन भाषा और लिपि वहाँ की प्राकृतिक सुविधाओं के अनुसार विकसित होती है । क्योंकि मनुष्य अपनी पहचान में नित्य श्रेष्ठता को जोडना चाहता है ।

भाषा का प्रचार क्षेत्र जैसे-जैसे विस्तार होता है, उसके एकाधिक रूप विकसित होने लगते हैं । शिक्षित और अशिक्षित मनुष्यों में इसका स्पष्ट अंतर दिखाई देता है । जैसे मज़दूरों की भाषा से अधिकारियों की भाषा सभ्य एवं परिनिष्ठित होती है ।

कहा जाता है कि मजबूरी मनुष्य को हर तरह का पाठ पढ़ाती है । भाषा शास्त्रज्ञ जॉर्ज यूले अपनी किताब द स्टडी ऑफ लांग्वेज में कहते हैं कि ब्रिटन के लोग दुनिया के विभिन्न भागों में जीविका ढूँढते जाकर वहीं बसे । इससे उनकी भाषा तथा साहित्य का विस्तार हुआ ।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए दो किताबें आधारभूत सामग्री उपलब्ध कराती हैं । एक डॉ. भोलानाथ तिवारी की किताब 'कोशविज्ञान' (1979) हिंदी शब्दकोश साहित्य का परिचय कराती है । दूसरी श्री एन्. बसवाराध्य की किताब 'हळगन्नड निघंटु' (1976) कन्नड शब्दकोश साहित्य का परिचय कराती है । ये दोनों ग्रंथ

अस्सी के दशक के हैं । हिंदी और कन्नड दोनों भारतीय भाषाएँ होते हुए भी एक दूसरे के संपर्क की कमी को तलाश ने का प्रयास किया गया है ।

4. **अनुसंधान की पद्धतियाँ** :

1. अन्वेषणात्मक पद्धति
2. संश्लेषणात्मक पद्धति
3. विश्लेषणात्मक पद्धति
4. भाषावैज्ञानिक पद्धति
5. साक्षात्कार पद्धति
6. तुलनात्मक पद्धति
7. मूल्यांकन पद्धति

1. **अन्वेषणात्मक पद्धति** :

इस पद्धति में किसी समस्या के संबंध में प्राथमिक जानकारी प्राप्त कर कल्पना का निर्माण और अध्ययन की रूपरेखा तैयार की जाती है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा तैयार करने के लिए हिंदी और कन्नड शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से शब्दकोशों का अन्वेषण आरंभ किया । इसमें मुझे अगल-अलग मार्ग दिखाई दिए । इनमें से हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण किया है । विश्लेषण में उपलब्ध जानकारी को शोध-प्रबंध में जोड दिया है ।

2. **संश्लेषणात्मक पद्धति** :

इस पद्धति में, हम ज्ञात से अज्ञात की ओर आगे बढ़ते हैं । किसी भी विषय को सुचारु रूप से अध्ययन करने के लिए उसे अलग-अलग भागों में विभाजन किया जाता है । इस शोध कार्य में शब्दकोशों की आधार-सामग्री संग्रह करने के लिए उन्हें

अलग-अलग भागों में विभाजन किया गया है। जैसे- हिंदी के आरंभिक शब्दकोश, कन्नड के आरंभिक शब्दकोश। हिंदी के आधुनिक शब्दकोश, कन्नड के आधुनिक शब्दकोश। हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोश के रूप में विभाजन कर उनके बीच की समानता और अंतर का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

3. **विश्लेषणात्मक पद्धति** :

विश्लेषणात्मक अनुसंधान में शोध से संबंधित सामग्री संकलित की जाती है। इसके बाद जानकारी के आधार पर संकलित की गई सामग्री का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। पूर्व में एकत्रित किए गए तथ्यों, आँकड़ों, विचारों आदि से परे अंतर्दृष्टि रखते हुए संचित तथ्यों व आँकड़ों के पीछे की कहानी कुछ और भी हो सकती है। जैसे आरंभ में कम प्रकाशित कन्नड शब्दकोशों की संख्या कि कमी को लेकर अध्ययन किया। इसमें पता चला कि फ. गु. हळकट्टी का शिवानुभव शब्दकोश प्रकाशित करने से मना करके बासेल मिशन वालों ने वापस भेज दिया। इसमें एक बात हो सकती है कि उनके धर्म प्रचार पर संकट आ सकता हो। संपादक ने खुद अपना घर बेच कर शब्दकोश छापने की व्यवस्था की। ऐसे ही हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी के कई शब्दकोश कर्नाटक राज्य से बाहर प्रकाशित हुए हैं। इससे पता चलता है कि उस समय अधिकार केंद्रीकरण या राजनीति के विचार भी प्रभावकारी हो सकते हैं।

4. **भाषावैज्ञानिक पद्धति** :

यह शोध की शास्त्रीय पद्धति है। इसके अंतर्गत भाषा की संरचना का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। शब्दकोश निर्माण के लिए भाषा का गहरा अध्ययन आवश्यक होता है। इस शोध-प्रबंध में हिंदी और कन्नड भाषाओं की लिपियों का वैज्ञानिक अध्ययन का विश्लेषण किया है। इन लिपियों का शब्दकोशों में उपयोग होना अब भी बाकी है। इसकी जानकारी शोध-प्रबंध में कराया है।

5. **साक्षात्कार पद्धति** :

अनुसंधान में साक्षात्कार पद्धति का उद्देश्य मौलिक जानकारी प्राप्त करना होता है। यह पद्धति गहन और सही तथ्यों का पता लगाने के लिए मदद करती है। कन्नड पदनिधि के संपादक फादर प्रशांत माड्ता जी का साक्षात्कार किया है। इनके कोश रचना प्रक्रिया से संबंधित विचारों को शोध-प्रबंध के तृतीय अध्याय में सम्मिलित किया है।

6. **तुलनात्मक पद्धति** :

तुलनात्मक पद्धति का अर्थ आपस में तुलना करना है। तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग हम अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में भी करते हैं। नेताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की तुलना कर उन्हें भला या बुरा, उचित या अनुचित, सफल या असफल ठहराते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कई दृष्टियों से हिंदी-कन्नड शब्दकोश कन्नड-हिंदी शब्दकोशों से उन्नति का बोध कराते हैं।

7. **मूल्यांकन पद्धति** :

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके आधार पर किसी विषय के ज्ञान का आकलन करते हैं। मूल्यांकन के द्वारा किसी विषय में कमियों या विशेषताओं का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन से ज्ञान का विकास होता है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में अलग-अलग दृष्टिकोण से हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का मूल्यांकन किया गया है।

5. **अनुसंधान की व्याप्ति एवं सीमा** :

शब्दकोश विषय एक विस्तृत अध्ययन का क्षेत्र है। इसमें प्रवेश करना उतना सरल नहीं है। अध्ययन सामग्री की कमी को ध्यान रखते हुए, पहले मैं शब्दकोश पर शोध करने लिए कन्नड, हिंदी और अंग्रेजी तीन भाषाओं के शब्दकोशों को चुन लिया

। कोर्सवर्क और साहित्यिक पुनर् मूल्यांकन लिखते समय पता चला कि यह बहुत विस्तृत होगा । इसलिए हिंदी और कन्नड शब्दकोश का चयन किया । इस पर काम करने से पता चला कि हिंदी और कन्नड भाषा के करीब 400 शब्दकोश बने हैं । इन सब का संश्लेषण कर विश्लेषण करना आसान नहीं है । इस लिए हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन का चयन कर लिया है ।

अब लग रहा है कि इसमें आगे चलकर और भी शोध कर सकते हैं । जैसे- हिंदी और कन्नड शब्दकोशों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन हो सकता है । हिंदी शब्दसागर और कन्नड निघंटु का तुलनात्मक अध्ययन विषय को लेकर अध्ययन हो सकता है ।

6. अनुसंधान के अध्ययन का विभाजन :

विषय की समग्रता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में बाँटा गया है । वे सात अध्याय निम्नानुसार हैं :

हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय : शब्दकोश की अवधारणा

1.0 प्रस्तावना

1.1 शब्दकोश की परिभाषा एवं अर्थ

1.2 शब्दकोश का स्वरूप एवं प्रयोग

1.3 शब्दकोश का महत्व

1.4 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : शब्दकोश और अन्य विषयों का आंतरिक संबंध

2.0 प्रस्तावना

2.1 शब्दकोश और व्याकरण का आंतरिक संबंध

2.2 शब्दकोश और भाषाविज्ञान का आंतरिक संबंध

2.3 शब्दकोश और पारिभाषिक शब्दावली का आंतरिक संबंध

2.4 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : शब्दकोश की रचना प्रक्रिया

3.0 प्रस्तावना

3.1 शब्दकोश रचना की पूर्व तैयारी

3.2 शब्दकोश का निर्माण कार्य

3.3 शब्दकोश का प्रबंधन कार्य

3.4 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : शब्दकोश के प्रकार

4.0 प्रस्तावना

4.1 भोलानाथ तिवारी के अनुसार शब्दकोश के प्रकार

4.2 प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्य के अनुसार शब्दकोश के प्रकार

4.3 अन्य विशेषज्ञों के अनुसार शब्दकोश के प्रकार

4.4 अंतर्जाल पर उपलब्धता के आधार पर शब्दकोश के प्रकार

4.5 निष्कर्ष

पंचम अध्याय : हिंदी और हिंदी-कन्नड शब्दकोशों का विश्लेषण

5.0 प्रस्तावना

5.1 हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण

5.2 हिंदी शब्दसागर एक अनुशीलन

5.3 हिंदी-कन्नड शब्दकोशों का विश्लेषण

5.4 निष्कर्ष

षष्ठम अध्याय : कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण

6.0 प्रस्तावना

6.1 कन्नड शब्दकोशों का विश्लेषण

6.2 कन्नड निघंटु एक अनुशीलन

6.3 कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण

6.4 निष्कर्ष

सप्तम अध्याय : हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

7.0 प्रस्तावना

7.1 कालक्रम के आधार पर हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

7.2 स्तरीयता के आधार पर हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

7.3 आवृत्ति के आधार पर हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन

7.4 निष्कर्ष

उपसंहार

आधार ग्रन्थ :

संदर्भ ग्रंथ / पत्र-पत्रिकाएँ / अंतर्जाल साभार :

परिशिष्ट :

1. हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोश संपादकों का परिचय
2. हिंदी और कन्नड शब्दकोशों का विवरण
3. शोधार्थी के प्रकाशित लेख

प्रथम अध्याय :

शब्दकोश की अवधारणा

प्रस्तुत अध्याय में शब्दकोश के लिए प्रादेशिक, देशीय और विदेशी विद्वानों की परिभाषाओं का अनुशीलन किया है । शब्दकोश में शब्दों का अर्थ बताने के तरिकों का विश्लेषण किया गया है । इसके अंतर्गत शब्द का विग्रह करके, व्याख्या या वर्णन करके, पर्याय देकर और परिभाषा देकर समझाए जाने वाले शब्दों को उदाहरणों के साथ समझाया गया है ।

शब्दकोश का स्वरूप एवं प्रयोग के अंतर्गत शब्दकोश और निघंटु के बीच का अंतर बताया है । शब्दकोश के स्वरूप का परिचय कराया है । प्रारंभिक शब्दकोश की परंपरा का विश्लेषण किया है । शब्दकोश से संबंधित विद्वानों के विचारों का विश्लेषण किया है । शब्दकोश उपयोग करने के नियमों का विश्लेषण किया है । इसमें हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का उपयोग करते समय ध्यान देने वाली बातों का विश्लेषण किया है । शब्दकोश का महत्व के अंतर्गत कोश को संदर्भग्रंथ के रूप में देखने से होनेवाले उपयोगों का विश्लेषण किया है ।

जैसे-जैसे भौगोलिक दूरियाँ कम हो रही हैं, ठीक उसी तरह भाषाओं में नए-नए शब्दों का आदान-प्रदान अधिक हो रहा है । इसका परिणाम यह हो रहा है कि एक ही ध्वनि के कई अर्थ निकल आते हैं ।

जैसे–'म्यान' हिंदी में तलवार रखने का साधन और अंग्रेजी में मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है । 'नीड़' हिंदी में चिड़िया का घोंसला और अंग्रेजी में जरूरत के लिए प्रयुक्त होता है । 'बनाना' हिंदी में क्रियार्थक शब्द और अंग्रेजी में केले के लिए प्रयुक्त होता है ।

निष्कर्ष - आधुनिकता के कारण शब्दों का अर्थ तीव्र गति से बदल रहा है । इन्हें समझने के लिए नए शब्दकोशों की आवश्यकता है ।

द्वितीय अध्याय :

शब्दकोश और अन्य विषयों का आंतरिक संबंध

द्वितीय अध्याय में शब्दकोश और अन्य विषयों के बीच का आंतरिक संबंध बताया है । शब्दकोश एक ही विषय का अध्ययन चाहे जितना भी गहराई से करें वह अध्ययन अधूरा रह जाता है । इस अधूरापन को दूर करने के लिए उसमें निहित व्याकरण, भाषाविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली का विश्लेषण किया है ।

व्याकरण के अंतर्गत वर्ण, शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय और समास का विश्लेषण किया है । भाषाविज्ञान के अंतर्गत शब्द समूह, शब्दों का वर्गीकरण और शब्दों में परिवर्तन का विश्लेषण किया है । पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत इसकी अवधारणा, स्वरूप, विशेषताएं और निर्माण पद्धति का विश्लेषण किया है ।

निष्कर्ष – समभाषिक कोश के लिए एक भाषा और उसके व्याकरण की आवश्यकता होती है । द्विभाषा शब्दकोश के लिए दोनों भाषाओं का व्याकरण, अक्षर और लिपि की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है ।

तृतीय अध्याय :

शब्दकोश की रचना प्रक्रिया

तृतीय अध्याय के अंतर्गत शब्दकोश की रचना प्रक्रिया का विश्लेषण किया है । इस प्रक्रिया को तीन चरणों में विभाजित किया गया है – शब्दकोश रचना का पूर्वनियोजन कार्य, निर्माण कार्य और प्रबंधन कार्य । पूर्वनियोजन कार्य के अंतर्गत शब्दकोश का उद्देश्य, कोश का आकार, प्रविष्टियों के चयन का आधार, प्रविष्टियों की संख्या, प्रविष्टियों का क्रम, प्रविष्टियों से संबंधित सूचनाओं का विश्लेषण किया है ।

कोश निर्माण कार्य के अंतर्गत शब्द संकलन, प्रविष्टियों का चयन, वर्गीकरण, प्रविष्टियों से संबंधित सूचनाओं का लेखन एवं संकलन, अर्थ निर्धारण, विश्लेषित सामग्री के संश्लेषण का अनुशीलन किया है। कोश प्रबंधन कार्य के अंतर्गत कोश से संबंधित सूचनाएँ, उपयोगिता के निर्देश और कोश के अद्यतन का विश्लेषण किया है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्याय में शब्दकोश रचना प्रक्रिया के तीन चरणों का विश्लेषण किया है। इसे हम प्रारंभ, विकास और समाप्ति कह सकते हैं।

चतुर्थ अध्याय :

शब्दकोश के प्रकार

चतुर्थ अध्याय में शब्दकोश के प्रकारों का विश्लेषण किया गया है। भाषातज्ञों ने विभिन्न आधार पर शब्दकोश के अनेक प्रकार बनाए हैं। इन आधारों में उद्देश्य, भाषा, काल, अर्थ, प्रविष्टि-क्रम और विशिष्ट दृष्टिकोण आदि हैं। इन कोश विशेषज्ञों के कोश के प्रकारों का विश्लेषण किया गया है। हिंदी शब्दकोश संपादकों के अनुसार में डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा बताये गये प्रकारों का विश्लेषण उदाहरणों के साथ समझाया गया है।

कन्नड शब्दकोश संपादकों के अनुसार में प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्य द्वारा बताये गये प्रकारों का परिचय उदाहरणों के साथ समझाया गया है। हिंदी और कन्नड भाषा के अन्य विशेषज्ञों के अनुसार बताये गये प्रकारों का विश्लेषण किया गया है। इसमें पूरणचंद टंडन, डॉ. विल्यम माड्ता और आर् वाय् कुलकर्णी, डॉ. धनजी प्रसाद के प्रकारों पर प्रकाश डाला है।

उपलब्धता के आधार पर शब्दकोश विश्लेषण करते समय मुख्य दो आधार बनाया है। एक ग्रंथाकार और दूसरा अंतर्जाल पर उपलब्ध। ग्रंथाकार शब्दकोशों

का परिचय कराया जा चुका है। अंतर्जाल पर शब्दकोश दो रूपों में उपलब्ध है- एक पीडिएफ और दूसरा एयाप (अप्लिकेशन) । पीडिएफ ग्रंथाकार शब्दकोश की सॉफ्टकापी है। शब्द का अर्थ ढूँढने के लिए अनेक एयाप और वेबसाइट बने हुए हैं इनका विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्याय में तिवारी, वेंकटसुब्बय्य, टंडण और माड्ता आदि ने जो प्रकार बताया है, वे एक प्रकार से शब्दकोशों का वर्गीकरण ही लगता है। इन वर्गीकरण में आधुनिकता के कारण अंतर्जाल पर उपलब्ध शब्दकोश एक नया वर्गीकरण जोडा गया है।

पंचम अध्याय :

हिंदी और हिंदी-कन्नड शब्दकोशों का विश्लेषण

पंचम अध्याय में हिंदी और हिंदी-कन्नड शब्दकोशों का विश्लेषण किया है। कुल मिलाकर कन्नड-कन्नड के लगभग 200 शब्दकोश प्रकाशित हुए है। इनमें से उपलब्ध प्रमुख शब्दकोशों का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय को अध्ययन की सुविधा के लिए शब्दकोशों को तीन भागों में विभाजन किया है। इसमें हिंदी शब्दकोश साहित्य का विश्लेषण किया है। हिंदी शब्दकोश साहित्य में हिंदी शब्दसागर एक मील का पत्थर है। इसका विस्तार से अनुशीलन किया है। हिंदी-कन्नड द्विभाषा शब्दकोशों का विस्तार से विश्लेषण किया है। हिंदी-कन्नड शब्दकोश के क्रमानुसार प्रकाशन स्थानों का भौगोलिक परिचय कराया है।

निष्कर्ष – अबतक हिंदी-कन्नड के ग्यारह शब्दकोश बने हैं। स्वतंत्रता पूर्व दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए सन् 1918 ई. में दक्षिण

भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा मद्रास की स्थापना हुई है । इनके आधार पर किसी संस्था द्वारा एक नया शब्दकोश निर्माण करने की आवश्यकता है ।

षष्ठम अध्याय :

कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण

दो भाषाओं को जोडने में द्विभाषा शब्दकोश महत्वपूर्ण माध्यम है । प्रस्तुत अध्याय में कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण किया है । कुल मिलाकर कन्नड-कन्नड के करीब 175 शब्दकोश प्रकाशित हुए है । इनमें से उपलब्ध प्रमुख शब्दकोशों का विश्लेषण किया गया है ।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन की सुविधा के लिए शब्दकोशों को तीन भागों में विभाजन किया है । इसमें कन्नड शब्दकोश साहित्य का विश्लेषण किया है । कन्नड शब्दकोश साहित्य में कन्नड निघंटु एक मील का पत्थर है । इसका विस्तार से अनुशीलन किया है । कन्नड-हिंदी द्विभाषा शब्दकोशों का विस्तार से विश्लेषण किया है ।

कुल मिलाकर कन्नड-हिंदी के सात शब्दकोश प्रकाशित हुए हैं । इन शब्दकोशों का विश्लेषण किया गया है । कन्नड-हिंदी शब्दकोश के क्रमानुसार प्रकाशन स्थानों का भौगोलिक परिचय कराया है । शब्दकोश निर्माण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया में दोनों भाषाओं की समानता और असमानता का ध्यान रखना होता है ।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय पूरे देशवासियों को जोडने के लिए एक समन्वय भाषा की आवश्यकता थी । इस जरूरत को पूरा करने के लिए हिंदी के साथ भारतीय भाषाओं को जोडने का काम प्रारंभ हुआ । इसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दकोश बनने लगे ।

निष्कर्ष – संपादकों की जानकारी देने से बहुत-सी समस्याओं का समाधान हो सकता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी और भारतीय भाषाओं को जोडने के लिए सन् 1969 ई. में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान मैसूरु की स्थापना हुई है । इनके सहारे यह कार्य संभव हो सकता है ।

सप्तम अध्याय :

<u>हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन</u>

मनुष्य वेदों के समय से लेकर आज तक भाषा का प्रयोग करते आ रहा है । इस भाषा को ठीक से समझने तथा समझाने का काम भी तभी से शुरु हुआ है । विद्वान भाषा को जितना समझने का प्रयत्न करते हैं उसकी गहराई और विस्तार उतना ही बढ़ते जाती है । उसे समझने के लिए शब्दों की अर्थ-व्याप्ति को ढूँढना होता है । इस अर्थ व्याप्ति का पता लगाना ही शब्दकोश संपादक का लक्ष्य है ।

प्रशासन के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है । इसलिए शासक अपनी भाषा को जनता की भाषा के साथ जोड़ता है । राजा और प्रजा दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे होते हैं । इसलिए एक दूसरे के नजदीक आने का प्रयत्न करते हैं । राजा महाराजा युद्ध में जीतने के बाद प्रशासन के लिए दोनों भाषाओं को जोडना पडता था । अपनी भाषा में राजकाज चलाने के लिए स्थानीय भाषाओं का सहारा लेना पडता था ।

आधुनिक भाषाओं में हिंदी और कन्नड भाषा का अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्व है । यह दोनों आधुनिक भाषा होते हुए भी इनकी जड़ें 4वीं शताब्दी में रचित अमर सिंह के अमर कोश तक बने हैं । 19वीं शताब्दी के प्रारंभ होने तक दोनों भाषाओं में टीकाएँ (व्याख्या) लिखे गये । दोनों भाषाओं में स्वतंत्रता पूर्व जितने शब्दकोशों का संपादन हुआ था, स्वातंत्र्योत्तर लगभग उतने ही शब्दकोशों

का संपादन कार्य हुआ है। हिंदी शब्दकोश साहित्य के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने जो योगदान दिया है, वही योगदान कन्नड साहित्य परिषत्तु ने कन्नड निघंटु के लिए दिया है । प्रस्तुत अध्याय में हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी द्विभाषा शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

निष्कर्ष :

हिंदी-हिंदी के 200 से अधिक शब्दकोश बने हैं। कन्नड-कन्नड के करीब 200 शब्दकोश बन चुके हैं। लेकिन आजतक हिंदी-कन्नड के केवल 11 शब्दकोशों का संपादन हुआ है। कन्नड-हिंदी के केवल 7 शब्दकोशों का संपादन हुआ है। इन दोनों भाषाओं को जोडने वाले केवल 18 शब्दकोश ही बने हैं। इससे यह मालूम होता है कि हिंदी कन्नड दोनों भाषाओं को जोडने का प्रयत्न नाममात्र के लिए हुआ है।

कालक्रम के आधार पर अध्ययन से मालूम होता है कि कन्नड-हिंदी से हिंदी-कन्नड शब्दकोशों का प्रकाशन पहले हुआ है।

स्तरीयता के आधार पर अध्ययन से मालूम होता है कि कन्नड-हिंदी से हिंदी-कन्नड शब्दकोशों में अधिक मानकता दिखाई देती है।

आवृत्ति के आधार पर अध्ययन से मालूम होता है कि कन्नड-हिंदी से हिंदी-कन्नड शब्दकोशों की आवृत्तियाँ अधिक हैं।

उपसंहार :

परिवर्तन जीवित भाषा की निशानी है। समयानुसार भाषा में उतार-चढ़ाव दिखाई देता है । इसके कारणीभूत अंश हैं- सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, भौगोलिक आदि । शब्दकोशों का निर्माण कार्य इन्हीं अंशों से गुजरता है । इन परिवर्तित भाषा रूपों तथा साहित्य को समझने के लिए उसमें प्रयुक्त शब्दों को

समझना अत्यंत आवश्यक है । शब्दों का अर्थ जानने के लिए हम शब्दकोश का उपयोग करते हैं ।

आरंभिक चार अध्यायों में शब्दकोश से संबंधित विषयों की चर्चा की गयी है । जैसे- प्रथम अध्याय में शब्दकोश की परिभाषा, स्वरूप और महत्व का विश्लेषण किया है । द्वितीय अध्याय में शब्दकोश और अन्य विषयों के संबंध का विश्लेषण किया है । तृतीय अध्याय में शब्दकोश रचना प्रक्रिया का विश्लेषण किया है । चतुर्थ अध्याय में शब्दकोश के प्रकारों का विश्लेषण किया है ।

अंतिम तीन अध्यायों में हिंदी, कन्नड, हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों से संबंधित विषयों की चर्चा की गयी है । जैसे- पंचम अध्याय में हिंदी और हिंदी-कन्नड तथा षष्ठम अध्याय में कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का विश्लेषण किया गया है । सप्तम अध्याय हिंदी-कन्नड और कन्नड-हिंदी शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन में समानता और अंतर का विश्लेषण किया गया है ।

7 आधार ग्रंथ

हिंदी-कन्नड शब्दकोश

क्र.सं.	शब्दकोश	संपादक	प्रकाशन
1.	**हिंदी-कन्नड निघंटु**	प्रो. एम्. वि. जंबुनाथन्	एम् वी शेषाद्री एन्ड कंपनी, बळेपेटे, बेंगळूरु सिटि ।
2.	**हिंदी कन्नड कोष**	श्री पं. सिध्दनाथ पंत और श्री पी वेंकटाचल शर्मा	दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा, मद्रास ।
3.	**हिन्दी-हिन्दी-कन्नड रत्न कोश** **सचित्र हिंदी-हिंदी-कन्नड रत्नकोश** **सचित्र रत्नकोश हिंदी-हिंदी-कन्नड** (छोटा कोश)	**श्री जे डी मैसाले**	रामाश्रय बुक डिपो, धारवाड, कर्नाटक
4.	**हिन्दी-कन्नड शब्दकोश**	पं. गुरुनाथ जोशी	बी जी संकेश्वर एन्ड कंपनी, वीर सावर्कर मार्ग, गदग- 582 101
5.	**हिंदी-कन्नड वाग्वैलास्य निघंटु** जनसामान्यर हिंदी-कन्नड शब्दकोश	डॉ. के. गणपति भट्ट	अखिला एजन्सी, मैसूरु-24 अखिला एजन्सी, मैसूरु-24
6.	**हिंदी शब्द रत्नाकर-हिंदी-हिंदी-कन्नड शब्दकोश**	श्री कटील गणपति शर्मा	विश्व विद्या सदन ट्रस्ट बेंगळूरु-560041
7.	**सचित्र हिंदी-हिंदी-कन्नड शब्दकोश** **सचित्र हिंदी-हिंदी-कन्नड शब्दकोश**	अरविंद सुगूर	पी सी शाबादिमठ, बुक डिपो, गदग । रामाश्रय के चैतन्य प्रकाशन, शिवानंद नगर, धारवाड - 04
8.	हिंदी-कन्नड निघंटु	एम्. वी. राजु	वासन पब्लिकेशन
9.	**हिंदी-कन्नड अध्येता कोश**	प्रो. नंदकिशोर पांडे	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा - 282005

कन्नड-हिंदी शब्दकोश

क्र.सं.	शब्दकोश	संपादक	प्रकाशन
1.	**सचित्र कन्नड - हिन्दी आदर्श कोश** **आदर्श कोश कन्नड - हिन्दी** (छोटा कोश)	पंडित जे डी मैसाले प्रो. एस् व्ही भट प्रो. चंदूलाल दुबे	रामाश्रय बुक डिपो, वेजिटेबल मार्केट - धारवाड एल् आए आकळवाडी एंड रामाश्रय बुक डिपो, धारवाड
2	कन्नड-कन्नड-हिंदी शब्दकोश	पं. गुरुनाथ जोशी और बी. अश्वत्थनारायण	बी जी संकेश्वर, श्री बसवेश्वर बुक डिपो, हुब्बळ्ळी
3.	**कन्नड-हिन्दी शब्द कोश**	डॉ. एन. एस. दक्षिणामूर्ति	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4.	**जनसामान्यर कन्नड-हिंदी पदकोश**	डॉ. के. गणपति भट्ट	अखिला एजन्सी, मैसूरु-24
5	कन्नड-हिंदी पर्यायवाची कोश	म. पार्वतम्म नि. उमाकांत दि. नि. राजशेखर डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर	आए बी एच् प्रकाशन, एन् आर कालोनी, बेंगळूरु (08026677003)
6	कोडव-कन्नड-हिंदी-इंग्लिश शब्दकोश	डॉ. अम्मतंद पार्वती अप्पय्य	द रजिस्ट्रार, कर्नाटक कोडव साहित्य अकादमी मन्न्स् कंपौंड, मडिकेरी - 571 201

8. संदर्भ ग्रंथ -

क्र.सं.	रचनाकार	ग्रंथ/ पत्रिका	प्रकाशक
1	डॉ. भोलानाथ तिवारी	भाषा विज्ञान	किताब महल, सरोजिनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद (2008)
2	प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्य	कन्नड निघंटु परिवार	कन्नड पुस्तक प्राधिकार, बेंगळूरु - 2002
3	श्रीनिवासाचार्य	अभिधान रत्नमाला	Printed by controller of stationery and printing, Madras, on behalf of The government of Madras,

			(1958)
4	प्रो. के एन्. गंगानायक	कन्नडदल्लि अन्यभाषा पदनिष्पत्ति कोश	मैसूरु विश्वविद्यानिलय कुवेंपु कन्नड अध्ययन संस्थे, मानसगंगोत्रि, मैसूरु – 570 006. (2012)
5	डॉ. विल्यं माड्ता	निघंटुरचना विज्ञान	निदेशक प्रसारांग कन्नड वि. वि. हंपी – 58321. (1994)
6	श्यामसुंदर दास	हिंदी शब्दसागर	काशी नागरी प्रचारिणी सभा (1965)
7	डॉ. भोलानाथ तिवारी	कोशविज्ञान	शब्दकार 2203, गली डकौतान तुर्कमान गेट, दिल्ली (1979)
8	सं. रामवीर सिंह	गवेषणा शोध पत्रिका	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, जनवरी-मार्च (2009)
9	डॉ. पूरनचंद टंडन	हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद	किताब घर, अनसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, (2012)
10	जानथन मेटकॉफ	इल्युस्ट्रेटेड डिक्श्नरी	डोर्लिंग किंडर्स्ली एंड आक्स्फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ग्रेट ब्रिटन। (1998)
11	एच् एल् नागेगौड	कन्नड जानपद कोश	कन्नड जानपद परिषत्तु, कुमारपार्क, बेंगळूरु- 20, (1998)
12	प्रकाश चालुक्य	पर्याय पद संपद	सप्ना बुक हौस गांधीनगर, बेंगळूरु, (2012)
13	रा. य. धारवाडकर	कन्नड भाषाशास्त्र	गीता बुक हौस, के. आर. सर्कल, मैसूर – 570 001 (1987)
14	प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्य	संक्षिप्त कन्नड निघंटु	बी. एम्. श्रीकंठय्य अच्चुकूट, कन्नड साहित्य परिषत्तु, पंपमहाकवि रस्ते, चामराजपेटे, बेंगलूरु-18. (1975)
15	डॉ. हरदेव बहरी	राजपाल हिंदी शब्दकोश	राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली। (1994)
16	डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव	हिंदी धातुकोश	शब्द लोक प्रकाशन, वाराणसी (1980)
17	बदरीनाथ कपूर	आधुनिक हिंदी प्रयोग कोश	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली (1997)
18	ष. शेट्टर	प्राकृत जगद्वलय प्राकृत-कन्नड-संस्कृत भाषेगळ अनुसंधान	अभिनव प्रकाशन 17/18-2, मोदलनेय मुख्यरस्ते, मारेनहळ्ळि, विजयनगर, बेंगळूरु-40 (2018)

19	प्रो. वंशीधर तथा धर्मपाल शास्त्री	सुगम हिंदी व्याकरण	शिक्षा भारती मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली। (2006)
20	रामचंद्र वर्म्मा	मानक हिंदी कोश	हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (1962)
21	ना. नागप्पा	अभिनव हिंदी व्याकरण	राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली। (1971)
22	मुकुंदीलाल श्रीवास्तव	ज्ञान शब्द कोश	ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस-1 (1956)
23	डॉ. मंजुनाथ बेविनकट्टी	सांस्कृतिक पदकोश- 1 (मैलारलिंग)	प्रसारांग कन्नड विश्व विद्यालय, हंपी (2000)
24	श्री एन्. बसवाराध्य	संक्षिप्त कन्नड निघंटु	कन्नड साहित्य परिषत्तु बेंगळूरु (2018)
25	प्रो. जी. वेंकटसुब्बय्य	इगो कन्नड निघंटु	नवकर्नाटक पब्लिकेशन्स् बेंगळूरु (1996)
26	प्रो. एम्. वि. जंबुनाथन्	हिंदी-कन्नड निघंटु	एम् वी शेषाद्री एन्ड कंपनी, बळेपेटे, बेंगळूरु सिटि। बेंगळूरु (1939)
27	डॉ. एन् एस् दक्षिणामूर्ति	कन्नड-हिंदी शब्द कोश	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (1971)
28	श्री सोमशेखर 'सोम'	हिंदी और कन्नड की समान शब्दावली का भाषावैज्ञानिक अध्ययन	अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पी-एच्. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध (1972)
29	प्रो. अवनीश कुमार	देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, (2019)
30	भोलानाथ तिवारी	अनुवाद विज्ञान	किताब घर प्रकाशन, अंसारी रोड, दिल्ली। (2015)
31	श्री नवल प्रभाकर	नालंदा विशाल शब्दसागर	ला. फूलचंद जैन, न्यू इंपिरियल बुक डिपो, नई सड़क, देहली। (1950)
32	केदारनाथ भट्ट	रामायण कोश	केदारनाथ भट्ट, यशोदा सदन, बनारसी बाग़, लखनऊ। (1948)
33	आचार्य रामचन्द्र वर्मा	प्रामाणिक हिंदी कोश	हिंदी साहित्य कुटार, हाथी गली, बनारस और साहित्य-रत्न-माला कार्यालय, धम्म कूप, बनारस (1950)
34	हरिवंशराय शर्मा	साहित्यिक सुभाषित कोश	राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली-6 (1995)
35	राम प्रकाश पाठक	रॉयल मानक विशाल	रॉयल बुक डिपो, दिल्ली – 06
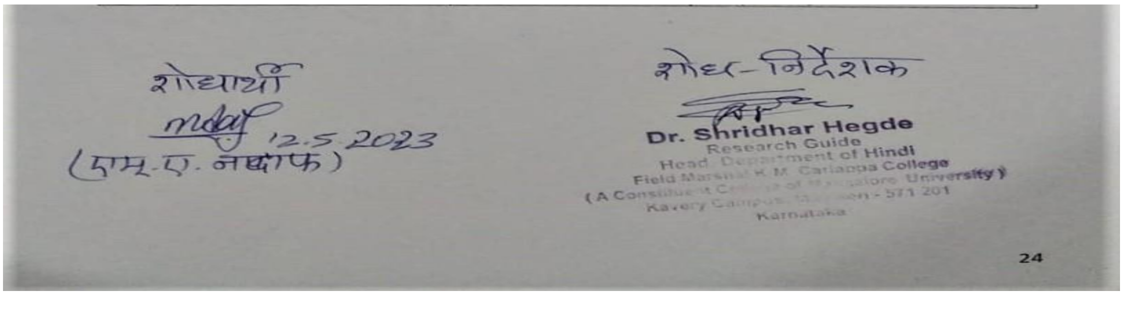
	शिव प्रकाश पाठक लक्ष्मीकांत उपाध्याय	हिंदी-शब्दकोश	(2006)
36	पं. सिध्दनाथ पंत और श्री पी. वेंकटाचल शर्मा	हिंदी कन्नड शब्दकोश	दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा, मद्रास (1950)
37	श्री जे डी मैसाले	हिन्दी-हिन्दी-कन्नड रत्न कोश	रामाश्रय बुक डिपो धारवाड कर्नाटक (1950)
38	पं. गुरुनाथ जोशी	हिंदी-कन्नड शब्दकोश	बी जी संकेश्वर एन्ड कंपनी, वीर सावर्कर मार्ग, गदग (2019)
39	डॉ. के गणपति भट्ट	हिंदी-कन्नड वाग्वैलास्य निघंटु	अखिला एजन्सी, मैसूरु (1990)
40	डी वी होळळ	संज्ञार्थ तत्वकोश	डी. वी. होळळ, विद्वान, तेक्कटे, कुंदापुर (कर्नाटक) (1974)
41	के एस उमापति	नुडिमुत्तु	रंजन प्रकाशन मैसूरु-570006 (1982)
42	पंडित चे. ए. कावली	सचित्र कन्नड-कन्नड कस्तूरी कोश	एल्. आए. आकळवाडी, रामाश्रय बुक डिपो, सुभास रोड, धारवाड (1989)
43	ए. के. कुलकर्णी	कुमारव्यास निघंटु	समाज पुस्तकालय, धारवाड (1971)
44	श्री मडिवाळ स्वामी	अक्कमहादेविय वचनगळ पदप्रयोग कोश	लिंगायत अध्ययन अकादमी, नागनूरु श्री रुद्राक्षीमठ शिवबसव नगर, बेळगावी । (2006)
45	डॉ. श्रीनिवास हावनूरु वी. कृष्ण	कनकदासर कीर्तनेगळ शब्द-प्रयोग पदकोश	कनकदास संशोधना केंद्र, मं. वि. वि. मंगळूरु । (2010)
46	एम् वी नागराजराव	पर्यायवाचक शब्दकोश	वसंत प्रकाशन, जयनगर, बेंगळूरु (2006)
47	पंडित जे डी मैसाळे	सचित्र कन्नड - हिंदी आदर्श कोश	रामाश्रय बुक डिपो, वेजिटेबल मार्केट, धारवाड (1957)
48	डॉ. बदरीनाथ कपूर	लोकभारती मुहावरा कोश	लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद -1 (1975)